

| | | |
|----|-------------------------------------|----|
| 14 | ον εως αυτου και κατ- | 16 |
| 15 | ειχον αυτον του μη | 15 |
| 16 | πορευεσθαι απ αυτων | 17 |
| 17 | ⁴³ ο δε ειπεν προς αυτο- | 16 |
| 18 | υς οτι και ταις ετερ- | 15 |
| 19 | αις πολεσιν ευαγγε- | 16 |
| 20 | λισασθαι με δει την | 16 |
| 21 | βασιλειαν του [—] θυ | 14 |
| 22 | οτι επι τουτο απεστα- | 17 |
| 23 | λην ⁴⁴ και ην κηρυσσων | 16 |
| 24 | εις τας συναγωγας | 15 |
| 25 | της ιουδαιας ^{5,1} εγενε- | 16 |
| 26 | το εν τω τον οχλον | 14 |
| 27 | επικεισθαι αυτω και | 17 |
| 28 | ακουειν τον λογον | 15 |
| 29 | του [—] θυ και αυτος | 13 |
| 30 | ην εστως παρα την | 14 |
| 31 | λιμνην γεννησαρετ | 16 |
| 32 | ² και ειδεν δυο πλοια | 15 |
| 33 | εστωτα παρα την | 13 |